315hi19

19

कंपनी शासन का जन विरोध

भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासनकाल के प्रारंभिक वर्षों में अनेक बगावतें और विद्रोह हुए। जैसा कि हमें मालूम है, 1750 ईस्वी से 1850 ईस्वी तक की 100 वर्षों की अवधि में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत को उपनिवेश में बदलने के लिए विभिन्न उपाय किए। इस अवधि के दौरान भारत में ब्रिटिश द्वारा अनेक नीतियाँ अपनाई गईं, जो मुख्यतः ब्रिटिश के हित में थीं। अनेक भू–राजस्व प्रयोग किए गए, जिनके कारण किसानों को मुश्किलों का सामना करना पड़ा। स्थानीय प्रशासन निर्धन ग्रामीणों को सहायता और प्राकृतिक न्याय देने में विफल रहा। इस पाठ में हम जानेंगे कि औपनिवेशिक प्रशासन में किसानों और आदिवासी लोगों ने कैसे दुःख उठाए तथा उन्होंने विद्रोह क्यों किए। महत्त्वपूर्ण जन संघर्षों के संक्षिप्त वर्णन से हम इन बगावतों के स्वरूप और महत्व का विश्लेषण कर सकेंगे। 1857 का विद्रोह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि अंग्रेजी शासन के खिलाफ इस एकीकृत आंदोलन में पहली बार विभिन्न जाति, धर्म और वर्ग की पृष्ठभूमि वाले लोग एकजुट हुए।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आप:

- 1857 तक हुए जन विद्रोहों की पृष्ठभूमि के बारे में चर्चा कर सकेंगे;
- इन विद्रोहों के स्वरूप और महत्व की व्याख्या कर सकेंगे;
- उन मुद्दों को पहचान सकोगे, जिनके कारण 1857 का विद्रोह हुआ और
- 1857 के विद्रोह की सार्थकता और महत्त्व का विश्लेषण कर सकेंगे।

19.1 जन विद्रोह के लिए जिम्मेदार परिस्थितियाँ

प्रारंभिक पाठों में हम पढ़ चुके हैं कि भारत में ब्रिटिश शासन ने भारतीयों के सामाजिक एवं–आर्थिक जीवन में अनेक परिवर्तन किए। औद्योगिक क्रांति (इसके बारे में हम अगले पाठों में और अधिक जानेंगे) के चलते इंग्लैंड को अन्य राष्ट्रों में

कच्चा माल और बाजार ढूँढना आवश्यक हो गया। इस आवश्यकता ने भारत में औपनिवेशिक शासकों की नीति को प्रभावित किया। भारतीय अर्थव्यवस्था को ब्रिटिश शासकों के हितों के अनुकूल बना लिया गया। आओ हम इस अवधि के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था में आए कुछ महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों का स्मरण करते हैं।

- सम्पत्ति से संबंधित नियमों का एक नया संग्रह सामने लाया गया तथा भूमि को बेचे जाने योग्य वस्तु बनाया गया।
- भूमि के निजी स्वामित्व को मान्यता प्रदान की गई तथा स्वामी और भूमि पर खेती करने वाले किसान के बीच अनेक मध्यस्थ आ गए।
- ब्रिटिश पूंजीपतियों को लाभ पहुँचाने के लिए खाद्य फसलों की जगह वाणिज्यिक फसलों को बढ़ावा दिया गया।
- व्यापारियों, नौकरशाहों और भूस्वामियों द्वारा भूमि में सट्टेबाजी एवम् निवेश करने से दूरस्थ भू–स्वामी की परिपाटी का विकास हुआ।
- करों के बढ़ते भार से किसान आसानी से राजस्व संग्रहकर्ताओं, व्यापारियों और साहूकारों के शिकार होते गए।
- भारत से इंग्लैंड में धन का स्थानांतरण सामान्य बात हो गई।
- ब्रिटेन में उत्पादित वस्तुओं को बाजार में स्थान देने के लिए स्थानीय उद्योगों को कुचला गया।
- ब्रिटिश सरकार की भू–राजस्व नीति के कारण आदिवासियों ने भूमि पर अपने परंपरागत अधिकार खो दिए।

इन सब परिवर्तनों से ग्रामीण समाज विशेष रूप से किसानों और आदिवासियों को भयंकर झटका लगा। किसान के लिए कृषि अर्थव्यवस्था और सामाजिक ढांचे में नए परिवर्तनों का अर्थ किसान का और अधिक तथा व्यवस्थित शोषण किया जाना था।

इसे फिर स्मरण करें, औपनिवेशिक शासकों को उच्च दरों पर निर्धारित राजस्वों की समय पर वसूली करने से मतलब था। राजस्व एकत्रित करने में लगे जमींदारों और अन्य लोगो को किसानों की राजस्व भुगतान करने की क्षमता से कोई मतलब नहीं था और वे करों की जबरन वसूली करते थे। करों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए किसान अपनी जमीनें बेचने को मजबूर हो जाते थे अथवा साहूकारों के चंगुल में फँस जाते थे। स्थानीय प्रशासन से न्याय की आशा नहीं की जा सकती थी क्योंकि वह तो धनी लोगों के प्रभाव में रहता था। इस प्रकार औपनिवेशिक शासन के दौरान कर्मचारी, भू–स्वामी और साहूकार कृषकों का शोषण करने के लिए एकजुट हो गए। सन् 1770 में बंगाल में पड़ा अकाल ग्रामीण समाज पर ब्रिटिश साम्राज्य की नीति के विध्वंसकारी प्रभाव का प्रमाण है। अर्थव्यवस्था के उपनिवेशन के साथ–साथ ब्रिटिश सरकार ने स्थानीय प्रशासन और समाज में परिवर्तन किए, इससे स्थानीय लोगों में असंतोष और रोष पैदा हो गया। विभिन्न स्थानों पर फैले इस असंतोष ने विद्रोह का रूप धारण कर लिया।

आपकी टिप्पणियाँ

पाठगत प्रश्न 19.1

1. भारतीय किसानों ने ब्रिटिश सरकार द्वारा बढ़ाई जा रही करों की मांग को कैसे पूरा किया?

2. औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत किसानों का शोषण करने के लिए कौन–कौन सी एजेंसियों ने गठजोड़ कर लिए थे?

19.2 मुख्य विद्रोह

ब्रिटिश सरकार के प्रारंभिक विरोध के स्वरूप और महत्व का विश्लेषण करने से पहले यह बेहतर होगा कि हम कुछ विद्रोहों के विषय में जानें। 1760 ईस्वी के दशक से 1857 के विद्रोह तक भारत के विभिन्न भागों में कई विद्रोह हुए। इन विद्रोहों पर हम दो श्रेणियों–कृषक विद्रोह तथा आदिवासी विद्रोह में चर्चा करेंगे।

1. कृषक विद्रोह

करों के बढ़ते भार, भूमि से बेदखली और बंगाल में पड़े अकाल से किसानों का एक बहुत बड़ा वर्ग निर्धन हो गया। भूमि से बेदखल इनमें से बहुत से लोग सन्यासी और फकीर बन गए। हालांकि ये धार्मिक भिखारी थे, भिर भी वे अमीरों के अनाज गोदामों और स्थानीय सरकार के खजानों को लूटते थे। ये संन्यासी अकसर अपना धन गरीबों में बाँट देते थे और इन्होंने अपनी स्वयं की सरकार स्थापित कर ली। यद्यपि, ये ब्रिटिश शासकों के सशक्त दमनकारी उपायों के सामने अपने संघर्ष को ज्यादा लंबे समय तक जारी नहीं रख सके। बंकिम चंद्र चटर्जी ने संन्यासी विद्रोह को चिरस्मरणीय बनाने के लिए आनन्द मठ नाम का उपन्यास लिखा था।

बंगाल के दो जिलों रंगपुर और दिनाजपुर के किसान राजस्व ठेकेदार के अत्याचार से दुखी थे। ऐसे एक राजस्व ठेकेकार, देबीसिंह ने कर वसूल करने के लिए किसानों पर अत्याचार करके आतंक फैलाया हुआ था। जब ब्रिटिश अधिकारी किसानों की रक्षा करने में विफल रहे तो किसानों ने कानून को अपने हाथों में ले लिया। उन्होंने स्थानीय कचहरियों तथा ठेकेदारों और सरकारी कर्मचारियों के गोदामों पर आक्रमण किया। विद्रोहियों ने अपनी स्वयं की सरकार बनाई तथा कंपनी एजेंटों को राजस्व का भुगतान करना बंद कर दिया। यह विद्रोह 1783 में हुआ। विद्रोहियों को अंततः कंपनी अधिकारियों के समक्ष जबरन समर्पण करना पड़ा।

दक्षिण भारत में भी स्थिति अलग नहीं थी। बेदखल किए गए भूस्वामियों और विस्थापित किसानों ने विद्रोह कर दिया। तमिलनाडु मालाबार और तटीय आंध्र प्रदेश के पॉलिगरों ने 18वीं शती के अंत में और 19वीं शती के प्रारंभ में औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध विद्रोह किया। मालाबार के मप्पिलों का विद्रोह सबसे महत्त्वपूर्ण था। मालाबार के मप्पिला यहाँ बस गए अरब जाति के लोगों के वंशज थे और वे

धर्म परिवर्तन कर हिन्दू बने थे। इनमें ज्यादातर भूमि का किराया देकर खेती करने वाले, भूमिहीन मजदूर, छोटे व्यवसायी तथा मछुआरे थे। ब्रिटिश द्वारा 18वीं शताब्दी के अंतिम दशक में मालाबार पर विजय तथा मालाबार में ब्रिटिश भू–राजस्व प्रशासन के प्रारंभ होने से मप्पिला भड़क उठे। अधिक कर–निर्धारण, अवैध कर, भूमि से बेदखली तथा भू–स्वामित्व अधिकार में परिवर्तन इनमें बढ़ते असंतोष के कारण थे। इसलिए उन्होंने ब्रिटिश और भूस्वामियों के विरुद्ध विद्रोह किया। धार्मिक गुरूओं ने मप्पिलों की एकता को मजबूती प्रदान करने और ब्रिटिश–विरोधी चेतना का विकास करने में सहायता की। इन मप्पिलों का औपनिवेशिक शासकों द्वारा दमन किया गया।

उत्तरी भारत में पश्चिमी उत्तर प्रदेश और हरियाणा के जाटों ने सन् 1824 में विद्रोह किया। पश्चिम भारत में महाराष्ट्र विद्रोह का आम केंद्र था तथा गुजरात में कोलियों ने विद्रोह किया। हम किसान विद्रोहों की सूची में कुछ और भी सम्मिलित कर सकते हैं, लेकिन अब हम आदिवासी विद्रोहों का अवलोकन करें।

2. आदिवासी विद्रोह

औपनिवेशिक शासन की स्थापना से आदिवासी लोग भी प्रभावित हुए। जनसमुदाय की मुख्यधारा से अलग–थलग रहने वाले आदिवासी अपने स्वयं के संसार में रहते थे और इन पर उनकी स्वयं की परंपराएँ और रीति–रिवाज लागू होते थे। औपनिवेशिक सरकार ने आदिवासियों की भूमियों पर अपना अधिकार कर लिया और आदिवासियों से जबरन भूमि छीन ली थी। आदिवासी अपनी भूमि में औपनिवेशिक प्रशासन के प्रवेश से क्रोधित थे। खानदेश के भीलों और सिंहभूम (बिहार) के कोलों का उदाहरण लें, ये अपने मुखियाओं के शासन में स्वतंत्र थे। परन्तु इनके क्षेत्रों पर ब्रिटिश का कब्जा होने और इन आदिवासी भूमियों में व्यापारियों, साहूकारों और ब्रिटिश प्रशासन के प्रवेश से आदिवासी मुखियाओं के अधिकार कम हो गए। इससे आदिवासी नेताओं ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया तथा उन्होंने आदिवासी क्षेत्रें में सभी बाहरी व्यक्तियों को आक्रमण का निशाना बनाया। ब्रिटिश सरकार द्वारा इन विद्रोहों का दमन किया गया।

इसी प्रकार संथाल जाति के लोग बंगाल, बिहार और उड़ीसा की सीमा के एक बड़े भू–भाग में रहते थे। उनकी आजीविका जंगल की वनस्पति और प्राणियों पर निर्भर थी। ब्रिटिश शासन के प्रारंभ होने से उन्हें जंगल की भूमियों को साफ करना पड़ता था और जब वे इन भूमियो पर खेती करना प्रारंभ कर देते थे तो उनसे ये जमीन जबरदस्ती छीन ली जाती थी। इस प्रकार इनकी भूमियों पर भूस्वामियों, व्यापारियों और साहूकारों के प्रवेश से साधारण जिन्दगी जीने वाले संथालों की दुर्दशा हुई और उन्होंने अत्याचार सहे। इस अत्याचार ने संथालों को हथियार उठाने के लिए मजबूर किया, उन्होंने सिद्धू और कानू नामक दो भाईयों को अपना नेता बनाया। ऐसा माना जाता था कि सिद्धू और कानू को देवताओं के ऐसे आशीर्वाद प्राप्त थे कि वे इनकी दुर्दशा को समाप्त कर सकते थे। उन्होंने अपनी जमीनों को वापस लेने और अपनी खुद की सरकार स्थापित करने का निर्णय लिया। इन विद्रोही संथालों को ग्वालों, तेलियों, लुहारों और अन्य स्थानीय गरीब लोगों का समर्थन प्राप्त था। विद्रोही संथाल अंततः ब्रिटिश के निर्दयतापूर्ण अत्याचारों के सामने विफल रहें।

आपकी टिप्पणियाँ

19.3 प्रारंभिक विरोध का स्वरूप एवम् महत्व

जन विद्रोहों के उपर्युक्त वर्णन ने इन विद्रोहों के स्वरूप के बारे में कुछ बिन्दुओं को स्पष्ट किया है।

- विद्रोहियों के कार्य यह प्रमाणित करते हैं कि उन्हें अपने हितों और अपने शत्रुओं के बारे में स्पष्ट ज्ञान था। किसान और आदिवासी विरोध आंदोलनों की कुछ विशेषताएँ उनमें जन्मी राजनीतिक और सामाजिक संचेतना के एक निश्चित स्तर को दर्शाती हैं।
- कई अवसरों पर स्थानीय मुद्दों के कारण ये विद्रोह आरम्भ किए गए होगें। लेकिन इस आंदोलन के विस्तार के दौरान इसके उद्देश्य और व्यापक होते गए। एक आंदोलन का आरंभिक कारण स्थानीय भूस्वामियों द्वारा दमन करना रहा हो परन्तु एक बार ये आन्दोलन शुरू हुए तो इनकी परिसमाप्ति ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति विरोध के रूप में हुई।
- धार्मिक विश्वास, जातीय संबंधों और परंपराओं ने किसानों को एकजुट होने तथा उनकी एकता को सुदृढ़ बनाने में सकारात्मक भूमिका निभाई। कई बार अपने अतीत के सुखद विचार विद्रोहियों को अपना खोया हुआ अतीत प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते। अतीत का स्मरण मुख्यतया विद्रोहियों के लिए शोषण और अत्याचार की पीड़ा से मुक्ति पाना था।
- शासक वर्ग ने इन विद्रोहों को कानून और व्यवस्था के लिये समस्या तथा अपराधों के रूप में निर्धारित करने का प्रयास किया। यह किसानों की तकलीफों को सुनने, समझने और उनके प्रतिरोध अधिकार को पूरी तरह से अस्वीकार करना है। किसानों और आदिवासियों की कार्य प्रणाली को इसके अपने ढंग से समझना आवश्यक है।
- यद्यपि, पुराने आदेश की बहाली के बाद विद्रोहियों की कोई भावी योजना नहीं थी। अपने सीमित उद्देश्य और संकीर्ण वैश्विक विचार के बावजूद विद्रोहियों ने निश्चित रूप से औपनिवेशिक साम्राज्य के अलोकप्रिय गुणों को प्रकट किया।

पाठगत प्रश्न 19.2

1. संथाल विद्रोह कौन से क्षेत्र में हुआ?

2. कौन–से उपन्यास ने संन्यासी विद्रोह को चिरस्मरणीय बनाया?

19.4 1857 का विद्रोह-कारण और कार्य प्रणाली

प्रारंभिक भाग में हमने पढ़ा कि विभिन्न समय पर भारत के अलग–अलग भागों में ब्रिटिश साम्राज्य को जन विद्रोहों ने कैसे चुनौती दी। 1857 में पहली बार देखने में आता है कि ब्रिटिश विजय के विरुद्ध समाज के कुछ अन्य वर्गों के साथ–साथ असंतुष्ट किसान आंदोलन में समाज के विभिन्न वर्ग समेकित रूप से एकजुट हो

गए। कई इतिहासकार 1857 की घटनाओं को राष्ट्रवाद की प्रारंभिक अभिव्यक्ति समझ रहे हैं।

विद्रोह के कारण

ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध लोगों के असंतोष को प्रेरित करने वाली विशेष तकलीफें थीं, जिनसे 1857 का विद्रोह हुआ। यह विद्रोह 10 मई को मेरठ में प्रारंभ हुआ, जब सिपाहियों ने विद्रोह किया और अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह द्वितीय को पुनः सिंहासन पर बैठाने के लिए दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। सिपाहियों द्वारा प्रारंभ किया गया यह विद्रोह शीघ्र ही समाज के अन्य वर्गों में फैल गया। ऐसा क्यों हुआ? ब्रिटिश सरकार द्वारा भू–राजस्व प्रणाली और प्रशासनिक ढांचे में परिवर्तन करने से ज्यादातर स्थानीय जनसमुदायों ने इसके राज को अस्वीकार कर दिया। लॉर्ड डलहौजी की संयोजन नीति और समाप्ति सिद्धांत, विशेष रूप से अवध और उत्तर एवम् मध्य भारत के अन्य भागों के संयोजन से इस क्षेत्र के स्थानीय लोगों में व्यापक असंतोष पैदा हो गया। भूमि मुख्य आर्थिक संसाधन होने के कारण ब्रिटिश द्वारा भारत में विभिन्न भू–राजस्व बंदोबस्त जैसे स्थायी बंदोबस्त, रैयतबाड़ी बंदोबस्त, महलबाड़ी बंदोबस्त आदि प्रारंभ किए गए, जिनका स्थानीय समाज में भू–वितरण और शक्ति वितरण पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। नए भू–बंदोबस्तों का मुख्य उद्देश्य सरकार की राजस्व आय को बढ़ाना और ऐसे स्थानीय एजेंटों के वर्ग का सृजन करना था, जो ब्रिटिश साम्राज्य का समर्थन करते हों। इन सबका किसानों पर अनर्थकारी प्रभाव पड़ा और राजस्व की बढ़ती मांगों के कारण तालूकदारों और अन्य मुखियाओं को भी मजबूरन अपनी भूमि बेचनी पड़ी। साहूकारी और सम्पत्ति की नीलामी ने किसानों की मुश्किलों को और बढ़ा दिया। इंग्लैंड में बनी वस्तुओं के प्रोत्साहन और घरेलू उद्योग की उपेक्षा से कारीगर एवम् हस्तशिल्पियों पर भी बुरा प्रभाव पड़ा।

आर्थिक तकलीफों के अतिरिक्त अपनी प्राचीन रीति–रिवाजों और परंपराओं में ब्रिटिश हस्तक्षेप के विरुद्ध स्थानीय समाज में सामाजिक स्तर पर भी कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की गई थी। समाज में जातिगत श्रेष्ठता का दर्शन व्यापक होने के कारण ब्रिटिश अधिकारियों का एक वर्ग भारत को आधुनिक और सभ्य बनाने के कार्य में लगा हुआ था। लोग ब्रिटिशों द्वारा प्रारंभ किए गए सामाजिक विधान से आशंकित थे। विशेष रूप से सती प्रथा के उन्मूलन और विधवा के पुनर्विवाह का आम आदमी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। इन परिवर्तनों को स्थानीय परंपरा और संस्कृति में हस्तक्षेप के रूप में समझा गया। इसके साथ लागों में धर्म बदल कर ईसाई बनाए जानें का डर भी पैदा हो गया था। इन सब बातों ने लोगों को ब्रिटिश राज से विमुख कर दिया।

सिपाहियों में उत्पन्न रोष के उनके अपने कारण थे। सिपाही कम वेतन और पदोन्नति, पेंशन एवम् सेवा शर्तों के मामलों में जातिगत भेदभाव के कारण अप्रसन्न थे। किसान परिवारों के सिपाही ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रारंभ किए गए नए भू–बंदोबस्तों से भी अप्रसन्न थे। यह सच है कि सिपाही विभिन्न कारणों की वजह से उत्तेजित थे, परन्तु उनके तत्काल गुस्से का कारण उनकी यह शंका थी कि उन्हें सदियों पुराने अपने सांस्कृतिक लोकाचार को छोड़ना पड़ेगा। 1857 के विद्रोह से ठीक पहले राशन (आटे की बोरी) में हड्डियों का बारीक चूरा होने की अफवाह फैली। एनफिल्ड राइफलों के कारतूसों को लोड करने से पहले दांतों से काटना पड़ता था, ऐसी खबर थी कि उनमें सूअर और गाय

आपकी टिप्पणियाँ

की चर्बी भरी होती थी। उसे हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मों के सैनिकों के धार्मिक विश्वास पर आक्रमण समझा गया। दिल्ली में जारी घोषणा में सिपाहियों के भावों को अच्छी तरह दर्शाया गया था–'यह सर्वविदित है कि इन दिनों सभी अंग्रेज इन हानिकर मनसूबों पर विचार कर रहे हैं–पहले समग्र हिन्दुस्तानी सेना के धर्म को भ्रष्ट करना और फिर सबको जबरदस्ती ईसाई बनाना। इसलिए हम केवल अपने धर्म के कारण लोगों से जुड़े हैं और हमने एक भी नास्तिक को जीवित नहीं छोड़ा है तथा हम इन्हीं शर्तों पर दिल्ली राजवंश की पुनः स्थापना करते हैं।

विद्रोह की कार्य प्रणाली

प्रारंभिक उपद्रव मार्च, 1857 में उस समय प्रारंभ हुआ, जब कलकत्ता के निकट बैरकपुर में मंगल पांडे नामक सिपाही ने अन्य सिपाहियों को ब्रिटिश सेना अधिकारियों के खिलाफ

चित्र 19.1 स्वतंत्रता सेनानी, बहादुर शाह (द्वितीय)जफर, अंतिम मुगल सम्राट्

चित्र 19.2 झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, स्वतंत्रता सेनानी

चित्र 19.3 तांत्या टोपे

चित्र 19.4 नाना साहेब

विद्रोह करने के लिए कहा और उसने ब्रिटिश एड्जुटेंट को मार दिया। बाद में मंगल पांडे को गिरफ्तार कर फांसी पर लटका दिया गया। इसके बाद मई, 1857 में मेरठ में भारतीय सिपाहियों की रेजिमेंट्स ने ब्रिटिश अधिकारियों को मार डाला, जेल तोड़ दी, अपने साथियों को रिहा करा दिया और अंग्रेजों से पेंशन पाने वाले मुगल सम्राट् बादशाह बहादुर शाह जफर (द्वितीय) को अपना नेता बनाने के लिए दिल्ली की ओर कूच किया। ब्रिटिश शासन के समाप्त होने के बारे में अफवाह चारों ओर फैल गई तथा शीघ्र ही विद्रोह उत्तरी भारत और मध्य भारत के अन्य भागों में फैल गया। अवध में सिपाहियों ने घोषणा कर दी कि सिपाही राज आ गया। ब्रिटिश राज के विरुद्ध असंतोष और उसके मायाजाल से मुक्ति ने कई स्थानीय प्रमुखों, किसानों, कारीगरों, सिविल कर्मचारियों, धार्मिक विधियों से अपचार करने वालों आदि को इस विद्रोह में एकजुट कर दिया। अवध से यह विद्रोह लखनऊ, कानपुर, इलाहाबाद, बनारस, रोहिलखंड, बुंदेलखंड, ग्वालियर, झांसी और बिहार में फैल गया। इन क्षेत्रों में इस विद्रोह को सिविल जन समुदाय से व्यापक समर्थन मिला। इस विद्रोह के कुछ महत्त्वपूर्ण नेताओं में रानी लक्ष्मी बाई, तौंत्या टोपे, बेगम हजरत महल, नाना साहेब, आरा के कुंअर सिंह आदि थे।

पाठगत प्रश्न 19.3

1. भारतीय सिपाहियों की तकलीफें क्या थीं?

2. 1857 के विद्रोह के किन्हीं पाँच महत्त्वपूर्ण नेताओं के नाम बताओ?

19.5 इस विद्रोह का स्वरूप एवम् परिणाम

स्वरूप

1857 के विद्रोह के स्वरूप के संबंध में इतिहासकारों के अलग–अलग विचार हैं। ब्रिटिश इतिहासकारों ने इस विद्रोह की व्याख्या सिपाहियों के विद्रोह के रूप में की है। स्थानीय लोगों की तकलीफों और इस आंदोलन में उनकी भागीदारी को अनदेखा करते हुए ब्रिटिश इतिहासकारों का मानना था कि इस विद्रोह को सिपाहियों, कुछ भू–स्वामियों और राजकुमारों ने अपने निहित स्वार्थों के लिए आरम्भ किया। यद्यपि, 1857 पर हाल के शोधों में यह दावा किया गया है कि अप्रिय ब्रिटिश साम्राज्य के संयुक्त विरोध के सामने स्वार्थ पूर्ण प्रयोजनों का अधिक महत्व नहीं रह जाता है।

कुछ इतिहासकार 1857 के इस विद्रोह को भारत की स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध मानते हैं। जो इस व्याख्या से सहमत नहीं है, तर्क देते हैं कि विद्रोह के नेताओं ने नई सामाजिक व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास नहीं किया। उन्होंने बहादुर शाह दूतीय को आमंत्रित करके प्राचीन मुगल शासन को पुनः स्थापित करने की कोशिश की। कहा जाता है कि हालाकि राज्य बदलने के लिये भारतीयों की पहल और प्राथमिकता केन्द्रीभूत थीं 1857 में कोई राष्ट्रव्यापी विद्रोह नहीं हुआ। असंतुष्ट वर्ग में इसके प्रति वफादारी और

आपकी टिप्पणियाँ

विचारधारा में बिखराव था जिनके ध्यान में एक ऐसा पुराना समाज और नियम थे जो अधिक समय व्यावहारिक नहीं रहने वाले थे। इस प्रकार यह विद्रोह नहीं बल्कि पुनर्स्थापना जैसा काम था।

1857 के विद्रोह के हाल के अध्ययन इस विद्रोह में लोकप्रिय भागीदारी होने की बात कहते हैं। सिपाहियों और तालूकेदारों के अतिरिक्त ग्रामीण किसानो की बड़ी संख्या ने इस विद्रोह में भाग लिया। अवध के मामले में यह दर्शाया गया है कि तालूकेदारों और किसानों ने मिलकर आक्रमण आरंभ किया था। कई स्थानों पर तो तालूकेदारों ने ब्रिटिशों के साथ मिलकर शांति कायम की, परन्तु किसानों ने अपना आंदोलन जारी रखा। सिपाहियों के गांवों में अपने रिश्तेदारों से संबंध थे तथा सिपाहियों के इस विद्रोह ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अपनी शिकायततें जनता के सामने रखने के लिए नागरिक जनसमुदाय को प्रभावित किया। इस प्रकार 1857 के विद्रोह ने लोकप्रिय विद्रोह का रूप ले लिया।

इस विद्रोह की असफलता के कारण

1857 के इस विद्रोह में लोगों की अत्यधिक भागीदारी होने के बावजूद विद्रोहियों को अंततः ब्रिटिश सरकार के समक्ष आत्मसमर्पण करना पड़ा। विद्रोहियों की असफलता के निम्न कारण थे–

- विद्रोहियों के पास हथियारों और गोला–बारूद की सीमित मात्रा होती थी।
- विद्रोहियों में संचार और केंद्रीय नेतृत्व की कमी थी।
- ब्रिटिशों के पास पर्याप्त संसाधन और बेहतर हथियार और उपकरण थे।
- विद्रोहियों का विदेशी शासन को समाप्त करने के अलावा भविष्य के लिए कोई स्पष्ट राजनीतिक कार्यक्रम नहीं था।
- विद्रोही इस आंदोलन के व्यापक स्वरूप के बावजूद व्यापारियों, बुद्धिवादी वर्ग और कई स्थानीय राजकुमारों का सहयोग प्राप्त नहीं कर सके। जो प्रायः अंग्रेजों के समर्थक थे।

इस विद्रोह का महत्व

हालांक ब्रिटिश सरकार इस विद्रोह को कुचलने में सफल रही, परतु उसे लोगों के असंतोष की सीमा का पता लग गया। 1857 की घटनाओं ने ब्रिटिश सरकार को भारत के लिए अपनी नीति की पुनः जांच करने के लिए मजबूर कर दिया, अतः इस विद्रोह के बाद उन्होंने ऐसे किसी विद्रोह की भविष्य में होने से रोकने की रणनीति अपनाई। स्थानीय राजकुमारों का विश्वास पुनः जीतने के लिए ब्रिटिश सरकार ने घोषणा की कि वे अपने मौजूदा कब्जे वाले क्षेत्रों का और अधिक विस्तार नहीं करेंगे। वफादार राजकुमारों को विशेष पुरस्कार दिए गए। सैनिकों में एकता को रोकने के लिए फौज में भर्ती करने में संप्रदाय, जाति, जनजाति और क्षेत्रीय वफादारों को बढ़ावा दिया गया। ब्रिटिश सरकार ने जाति, धर्म और भारतीयों की क्षेत्रीय पहचान का चतुराई से उपयोग करते हुए 'फूट डालो और शासन करो' की नीति अपनाई। 1857 के विद्रोह का दूसरा महत्त्वपूर्ण परिणाम 1858 में शाही घोषणा पत्र की उद्घोषणा था। इस घोषणा से ईस्ट इंडिया

कंपनी के शासन को समाप्त करते हुए भारत का प्रशासन सीधे तौर पर ब्रिटिश राज के अधीन कर दिया गया।

अंत में, हालांकि विद्रोही असफल रहे, परन्तु ब्रिटिश राज के खिलाफ उनके वीरता पूर्ण संघर्ष ने लोगों के मस्तिष्क में गहरी छाप छोड़ी। भारतीय राष्ट्रवाद की भावना, जो कि 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विकासशील स्तर पर थी, इस विद्रोह से अत्यधिक प्रभावित हुई।

पाठगत प्रश्न 19.4

1. ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन कब और कैसे समाप्त हुआ?

2. इस विद्रोह की असफलता के तीन मुख्य कारणों को सूचीबद्ध करो?

आपने क्या सीखा

इस अध्याय में हमने सीखा है कि ब्रिटिश शासन की स्थापना से भारत ब्रिटिश साम्राज्य का उपनिवेश बन गया। इससे ग्रामीण समाज पर अत्यधिक बुरा प्रभाव पड़ा। अपनी भूमियों से बेदखल किए जाने से किसान अपनी स्वयं की भूमियों पर ही मजदूर बन गए। विभिन्न प्रकार के करों ने उनके जीवन को और अधिक दुखी बना दिया। जबकि ब्रिटिश द्वारा निर्मित वस्तुओं का आयात होने के कारण लघु उद्योगों के मालिकों को अपने कारखाने बंद करने पड़े। इन सब परिवर्तनों और ब्रिटिश प्रशासन के सहानुभूतिहीन रवैये ने किसानों को अपनी तकलीफें विद्रोह के माध्यम से कहने को मजबूर कर दिया। संगठित अंग्रेजी सशस्त्र सेना के सामने विद्रोह सफल नहीं हो पाए। तथापि, इन विद्रोहों ने भारत में अंग्रेजी राज के समक्ष भावी चुनौती के लिए मार्ग प्रशस्त किया। इस संबंध में, 1857 का विद्रोह इस अर्थ में अद्वितीय माना जाता है कि जाति, समुदाय और वर्ग की सीमाओं को समाप्त कर भारतीयों ने पहली बार ब्रिटिश शासन को संगठित रूप से चुनौती दी। हालांकि विद्रोहियों के प्रयास असफल रहे, परन्तु इससे भारत के प्रति अपनी नीति में परिवर्तन करने के लिए ब्रिटिश सरकार पर दबाव बनाया गया।

पाठांत प्रश्न

1. 1857 के विद्रोह से पहले के विद्रोहों के स्वरूप की व्याख्या कीजिए।
2. 1857 के विद्रोह के कारणों की चर्चा कीजिए।
3. 1857 के विद्रोह के महत्व की व्याख्या कीजिए।

आपकी टिप्पणियाँ

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

19.1

1. अपनी कब्जे वाली जमीनों की बिक्री द्वारा।
2. ब्रिटिश सरकार के कर्मचारी, भू–स्वामी और साहूकार।

19.2

1. बंगाल, बिहार और उड़ीसा की सीमा।
2. बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा लिखित आनन्द मठ।

19.3

1. कम वेतन तथा पदोन्नति, पेंशन और सेवा शर्तों में सामाजिक भेदभाव।
2. रानी लक्ष्मी बाई, तौंत्या टोपे, बेगम हजरत महल, नाना साहेब और आरा के कुंवर सिंह।

19.4

1. 1858 में ब्रिटिश राज द्वारा शाही घोषणा की उद्घोषणा के माध्यम से ।
2. खण्ड 19.5 देखें।

पाठांत प्रश्नों के संकेत

1. खण्ड 19.2, 19.3 देखें
2. खण्ड 19.4 देखें
3. खण्ड 19.5 का अनुच्छेद–4 देखें।